58 Р
362
Н

राष्ट्रीय अभिलेखागार पुस्तकालय
NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
भारत सरकार
Government of India
नई दिल्ली
New Delhi

1345
10/21

आह्वानांक Call No.
अवाप्ति सं० Acc. No. 362

॥ श्री हरिः ॥

दैवी-शक्ति

उर्फ़

अहिंसा की बिजली

जिसमें दादरा, सोहर, कजली, जाँता पर

गानेको राष्ट्रीय गीतें पवित्र गाली है

रचियता—

शिवशंकर द्विवेदी उपनाम "शंकर" कवि,

मकरीखोह, मिर्जापुर ।

प्रथमबार ५०००] सं० १९८७ [मू० -)

बिना आज्ञा कोई न छापै

891.431 D642D

NATIONAL ARCHIVES OF INDIA
No 362
Date 8.12.71
GOVT. OF INDIA

IMPERIAL RECORD DEPARTMENT
RECEIVED.
30 MAR. 1931

श्री हरि

दैवी-शक्ति

❁ सोहर ❁ ॥१॥

जयजय गिरजा के वारे, सदाँ रखवारे; सदाँ रखवारे हो।
या हो देवन के शिरताज, आज लाज राखहु हो ॥१॥
आदि देव कहवावहु, प्रथम पुजावहु; प्रथम पुजावहु हो।
या हो लम्बोदर महराज, आज लाज राखहु हो ॥२॥
भारत बहुत दुखारी, कहइँ नरनारी; कहइँ नरनारी हो।
प्रभु पूरण हो सब काज, आज लाज राखहु हो ॥३॥
चर्खा चक्र, चलावहि, लाज बचावहि, लाज बचावहिं हो
सब होय देशमें ही काज, आज लाज राखहु हो ॥४॥
दुश्मन बहुत सतावैं, खूब भरमावैं, खूब भरमावैं हो।
सब खींचत दाम अनाज, आज लाज राखहु हो ॥५॥
"शंकर" करहु सहाई, जुटेनि अन्याई, जुटेनि अन्याई हो।
अब हाली से होय स्वराज, आज राखहु हो ॥६॥

* शायरी कजली * ॥२॥

बहुत दिनोंतक भारत को भरमाया रे साँवलिया।
तूं कह कह मीठी बातें खुब फुसलाया रे सांवलियां ॥१॥
अब सब बातें समझ चुके हैं बातों में ना आवेंगे।
चर्खा चक्र चलावेंगे खुब सुन्दर सूत बनावेंगे॥
कर्घा से कपड़ा बिनवाकर घर भर को पहिनावेंगे।
छाँछठ कोटि रुपैया अब ना सागर पार पठावेंगे॥
लेकर दाम गुलाम हमैं बनवाया रे साँवलिया ॥२॥
फट जावै जब खद्दर तो उसकी सुजनीं सिलवावेंगे।
सदाँ बिछौना बना करै हम दरी क दाम बचावेंगे॥
गाढ़ा को रंगवा कर तोसक और रजाई पावेंगे।
साँचे रंगमें रंग कर चोला झोला भी लटकावेंगे॥
'रंग विरंगा झंडा' हम फहराया रे साँवलिया ॥३॥
बनैं स्वयंसेवक दल भारत माँ की लाज बचावेंगे।
राम नाम में रस, है क्या, उसको सबको समझावेंगे॥
अब अबलायें निकल पड़ीं तेरे बल को अजमावेंगे।

सत्याग्रह हित द्रव्य जुटा कर साँची सीख दिलावैंगे॥
आह गरीबी क़हर खुदा कर दाया रे साँवलिया॥४॥
"शंकर" सदाँ सहाय करैं जो गऊ बचानेवाले हैं।
कृष्ण, विष्णुका ध्यान करो प्रभु गर्ब पचानेवाले हैं॥
कालिन्दी के तटपर काली नृत्य करानेवाले हैं।
गिरिवर को धारण कर गोपी गोप बचानेवाले हैं॥
भूली बातें फिर से सब समझाया रे साँवलिया॥५॥

* शायरी कजली * ॥३॥

भये स्वयंसेवक दल खुब तइआर यार बलमू।
तब नौकरशाही हुई बहुत हुशियार यार बलमू॥१॥
"गाँधी" चर्खा चक्र चलाकर सूत बनाना सिखलाय॥
कर्घेसे कपड़ा बिनवा कर कुरता टोपी बनवाया॥
धोती चद्दर खद्दर की लुंगी भी अच्छी बिनवाया।
राह पुरानी भूल गये थे आंख खोलकर समझाया॥
आँख खोलकर समझाया तूँ छोड़ो अब झूठी माया।
प्रेम करो छोड़ो अब सब तकरार यार बलमू॥२॥

बस्त्र विदेशी माँग माँग फिर होली उसकी जलवाया।
मतलब की बातें समझा कर हमें नींदसे जगवाया॥
सन ओनइससै अट्ठाइस का मार्च महीना जब आया।
सातों थे अंग्रेज 'शाइमन नाम कमीशन' कहलाया॥
नाम कमीशन कहलाया, अब रिपोर्ट छपकर भी आया
प्रथम बम्बई में उतरे सरकार यार बलमू ॥३॥
आये हैं भारत देखन को लोगों से यह बतलाया।
सुने न कोई भारतवासी असहयोग था दिखलाया॥
खुब हड़ताल भई भारतमें, स्वागत कोई न करवाया।
जहाँ गये हड़ताल भई थी दुखकी झंडी दिखलाया॥
दुखकी झंडी दिखलाया, तब लोगों से यह फरमाया।
कहा देयँगे भारत को अधिकार यार बलमू ॥४॥
अब तो साड़ी पाड़ मखमली हमें तनक सुहाती है।
देख देख माता बहिनों को भाई लज्जा आती है॥
प्यारे युवकों उठो देशहित भारत माँत बोलाती है।
चलो तिरंगा झण्डा, लेकर सीधी राह बताती है॥

सीधी राह बताती है, सब जगह अग्नि धधकाती है।
कायर बनकर मत बैठो बेकार यार बलमू ॥४॥
मलमल की दल दल में फंसते अद्धी जो मंगवाते हैं।
चिकन आबरोवाँ लेकर रोआँ २ दिखलाते हैं ॥
ले तनजेब बिहार यार सब कोटिन द्रव्य गंवाते हैं ।
मखमल, सर्ज, छींट कशमीरा फलालैन जो आते हैं ॥
फलालैन जो आते हैं, क्या चमक दमक दिखलाते हैं।
जाता छाँछट कोटि समुन्दर पार यार बलमू ॥६॥
माल विदेशी सब छोड़ो गाँधी बाबा समझाते हैं।
ये कपड़े कुछ काम न आवैं पोतना भी गल जाते हैं ॥
छोड़ो बहिनों भाई इनको लेते सो पछताते हैं ।
देकर दाम गुलाम होत, हम नशामें कैसे माते हैं ॥
हम नशामें कैसे माते हैं, मनमें भी ना शरमाते हैं।
सच्चे नेता दिया जेलमें डार यार बलमू । ॥७॥
नये नये कानून आज भारत में बनते जाते हैं ।
क्या होगा कुछ पता नहीं भाई भाई लड़ जाते हैं ॥

लाठी से मरवाते हैं फिर भाई सभ्य कहाते हैं।
अवगुण कर के छिपा रहे प्रभु से भी नहीं डेराते हैं।
प्रभु से भी नहीं डेराते हैं, माताका लाज गंवाते हैं॥
बन्द होगया आज बहुत अखबार यार बलमू॥८॥ त०
"शङ्कर" स्वामी राह छोड़कर तोड़ा यह कैसा कानून।
देख देखकर जेल जायँ मानों जलतेपर लगता नून॥
युवकों, बच्चों, माताओं, बूढ़ों का खौल रहा है खून।
गाँव शहर सब नगर प्रान्त के नौकरशाही भये जनून॥
'नौकरशाही' भये जनून, गेहूं के संग पिसते घून।
चेत करो सब क्यों बैठे मनमार यार बलमू॥९॥

कजली मिर्जापुरी लय॥४॥

काहे भूलि गइल्य गांधी की बचनियाँ ना।
हे बचनियाँ ना, हो बचनियाँ ना॥ काहे०॥१॥
अब लजिया बचाव, मति समय गंवाव।
सब चरखा चलाव, नरनारी समझाव॥

तब मिटि जइहइँ तोहरी गिरनियाँ ना ॥ का० ॥२॥
सूत बढ़ियाँ बनाव, धोती अच्छी बिनवाव ।
लाज माता क बचाव, सब करघा मँगाव ॥
चीज छोड़ तूं बिदेशी बेसहनियाँ ना ॥ का० ॥३॥
छोड़ चिकन बिहार, जामदानी, सुईकार ।
फलालैन फूलदार, मखमल भी बेकार ॥
ज़रा सोच भाई भारत क हनियाँ ना ॥ काहे० ॥४॥
सब छोड़ तनजेब, बुक्क, छालटी करेब ।
खाली हुआ जाता जेब, रचैं फन्द वो फरेब ॥
तनी सोच भैया आपन करनियाँ ना ॥ का० ॥५॥
काहे तोड़थ्य कानून मिले सेतुआ औ नून ।
कैसा आय गया जून लोग हो रहे ज़नून ॥
तू बचाव भइया भारत क पनियाँ ना ॥ का० ॥६॥
नाहीं सुनते अरज़, भये बावला गरज़ ।
बढ़ा जाता है मरज़, भवा देश के करज़ ॥
"शंकर" गावइँ सभी लोग देशी तनियाँ ना ॥७॥

दादरा संग्रह ॥५॥

करो चरखे का घर घर प्रचार। मुसीबत सारी टलैं।
इसे चरखा न कहो चक्र सुदर्शन समझो।
दुश्मनों की जांका इसे जानका दुश्मन समझो॥
इसी को हिन्द की आजादी का कारण समझो।
'तकली' चाल भी न आप साधारण समझो॥
न हो इसके गुणों की शुमार। मुसीबत सारी टलैं॥१॥
इसकी रफ़्तार ने क्या सितम नई पाई है।
तोप तलवार ने इससे शिकस्त खाई है॥
इसकी खूबी तो अब विदेशों में भी छाई है।
इसके चलने से ही गरीबों की भलाई है॥
धन जावै न सागर के पार। मुसीबत सारी टलैं॥२॥
चोट से इसकी हैं घबड़ाते मशींगनवाले।
रो रहे हैं आज दुश्मन हमारे धनवाले॥
फूक डाले गये कपड़े तमाम सनवाले।
बनें खूख्वार आज साँप सभी फनवाले॥

रहे पत्थर पै फन फटकार। मुसीबत सारी टलैं ॥३॥
मौत करुणा से कहै जली जात छाती है।
बच्चे बूढ़े वो नव युवाओं को सिखाती है॥
हाय अफसोस तुम्हें शर्म नहीं आती है।
मरनेवाले को दवाई भी नहीं भाती है॥
अबलाओं को नाहक न मार। मुसीबत सारी टलैं ॥४॥
सुहागिनों का है शिंगार ये विधवों का सपूत।
कात कर सूत जो बिनवायेंगे खद्दर मज़बूत॥
इसके चलने से चले जायंगे भारत से छूत।
बन्द कर देगी भीख मांगना इसकी करतूत॥
देश भारत का होगा उबार। मुसीबत सारी टलैं ॥५॥
सूत से इसके अगर इत्तिफाक कर लोगे।
धन से भर दोगे मां का तन भी पाककर लोगे॥
होके धर्मज्ञ स्वदेशी रिवाज कर लोगे।
फूट भग जायगी कायम स्वराज कर लोगे।
कोई बोलै न कायर गंवार। मुसीबत सारी टलैं ॥६॥

विदेशी वस्तुओं को कोई भी मत खरीद करो।
स्वदेशी वस्तुओं से ही होली व ईद करो॥
हिन्दू मुसलिम व शिक्ख भाई से ताईद करो।
उठो अब सो चुके हौ मेल करो नींद हरो॥
मांत भारत को तेरा अधार। मुसीबत सारी टलैं॥७॥

गीत जांता पीसने वक्त गाने की ॥६॥

सुनउ मोरी गोइयां मइँ लागउं तोहरे पइयाँ हो?
लागउं तोहरे पइयाँ हो 'गाँधीबाबा' रहिया बतावइंहो
राम। उठि भिनुसारे बहिनीं चरखा चलावउ हो, चरखा
चलावहु हो, पेटे क बेमारी मिटि जावइँ हो राम ॥२॥
बहियाँ में बल बढ़इ, भुखिआ लगावइ हो, भुखिया
लगावइ हो। छाती क दरद मिटि जावइं हो राम॥३॥
सुतवा बनावउ मेंहीं धोतिया बिनावउ हो, धोतिया
बिनावउ हो। फाटइ तब सुजनीं सिआवइं हो राम॥४॥
बड़े बड़े घरवां क पढ़ी लिखी बहिनीं हो, पढ़ी लिखी

बहिनीं हो। घरे घरे इहइ समुझावइं हो राम ॥ ५ ॥
बहुत दिनन तक भूल कइलिउ बहिनीं हो, भूल कइलिउ बहिनीं हो। सबहो के रहिया देखावइं हो राम ॥ ६ ॥
त्रिजिया बिदेशी सब छोड़ि देउ बहिनी हो, छोड़ि देउ बहिनीं हो। अरबन घन बचि जांवइं हो राम ॥ ८ ॥
"शंकर" क कहनियां समुझि लेउ बहिनीं हो, समुझि लेउ बहिनीं हो। भाई बन्धू जेलिया न जावंइं हो राम ६
गांधी बाबा रहिया बतावंइं हो राम ।

गाली भोजन के शुभ अवशर परगाने की ॥७॥

देश के गांधी सँदेश सुनावहिं, सुनहु आज नरनारी जी रमजी ॥
आपुस के कजिआ से रजिआ जमवलेनि, बनिके आ येनि बयपारी। जी रम जी ॥ १ ॥
फूटसे भारत के थेथर करवलेनि, सोअ थें टांग पसारी॥ जी रमजी ॥ २ ।

नशवा के लशवा में तोहइ फँसवलेनि, हो रही लूट कगरी। जी रमजी ॥ ३ ॥

घिअवा अउ दुधवा क नउँआं मिटव लेनि, गउयें बहुत नित मारी। जी रमजी ॥ ४ ॥ लकड़ीक आटा 'एजू टेबिल, मँगवलेनि, किहेनि खूब व्येपारी। जी रमजी ॥ ५ ॥ रस्ता स्वराज क ओनहीं देखवलेनि, देखतूं आँखिउघारी ॥ जी रमजी ॥ ६ ॥ चरखा चलाव बहिनी से चलवाव, बिनवाव कर्घा से सारी ॥ जीरमजी ॥ ७ ॥ चिजिआ बिदेशी छोड़ि देत्य बउरहऊ हो, देशवा में कइल्य तयारी ॥ जीरमजी ॥ ८ ॥ मखमली धोती पहिन के माई सोती ! पहिन के भुआसोती पहिन के चाची सोती । पहिनके मामी सोती । काहीके देखावथ्य उघारी ॥ जीरमजी ॥ ९ ॥ मोछिआ क लजिआ बचाव हो बुँदेलऊ, काहीके अकिल गई मारी ॥ जीरमजी ॥ १० ॥ सलिआ में छांछठ कोटि रुपिअवा, चला जाता सागर पारी ॥ जीरमजी ॥

॥११॥ 'शङ्कर' गाँबइँ तोहइ समुझावइँ, भारत मांत पुकारी। जीरमजी ॥ १२॥

कजली (८)

नमक भारत का खाकर भाई, क्यों बन बैठे नमकहराम
सबही चर्खा चक्र चलाओ, करघा सेही वस्त्र बनाओ।
भाई बहिनों को पहिनाओ, भारतमां की लाजबचाओ
अब शौकीनी छोड़ो भाई, जाहिर जगमें नाम ॥ नमक॥
फूटबैर सबदूर भगाओ लूट विदेशी बन्द कराओ।
अरबों रुपया साल बचाओ, भारतमें सब चीजबनाओ।
भारतके हितकारी हौतो सहो शीत अरुघाम ॥नमक०॥
बहुत सो चुके निद्रा तोड़ो, गांजा तोड़ी शराब छोड़ो।
चेतकरो भय हरो भाइयों, क्यों बन रहे गुलाम ॥नमक०॥
गांधी जीने राह बताई, प्रेमकरो सब भाई भाई।
हिन्दू मुस्लिम वो ईसाई, नास होयँ जोहैं अन्याई ॥

सबही को समझा करभाई साधो, अपना काम ॥ न० ॥
राष्ट्रीय गाना सब गाओ, गांजा भांग शराब छुड़ाओ।
जल्दीसे मैदानमें आओ, पुरुषोंका मत नाम धराओ॥
"शँकर, बेगि स्वराज होयगा दया करेंगे राम ॥ न० ५॥

कजली ॥ ६ ॥

सेवक बन बन भारतमांता, तेरी लाज बचावैंगे।
सकल वस्तु देशी फौरन, सब जगह बनावैंगे ॥ १ ॥
बैर फूट को बन्द करा कर, लूट मिटावैंगे ॥ २ ॥
बना बना कर सूत, फूट सब मार भगावैंगे ॥ ३ ॥
आज़ादी के झन्डे को सबही फहरावैंगे ॥ ४ ॥ सेवक० ।
अर्बन द्रव्य साल जाता है, उसे बचावैंगे ॥ ५ ॥ सेवक० ।
"शंकर" सोये भाई को हम, जल्द जगावैंगे ॥ ६ ॥
सेवक बन बन भारतमांता, तेरी लाज बचावैंगे।

* गाना चलता पर गाने का * ॥१०॥

भारत क लाज बचाव, बिदेशिया के दूर भगाव।

चरखा चलाव तकली मंगाव,

करघा से कपड़ा बिनाव, बिदेशिया के दूर भगाव ॥१॥

कुरता गजी की गंजी सिआव,

खादी से प्रेम बढ़ाव, बिदेशिया के दूर भगाव ॥ २ ॥

जूता व छाता छड़ी भी हो देशी,

देशी घड़ी बनवाव, बिदेशिया के दूर भगाव ॥ ३ ॥

सारी विदेशी क होली जलाव,

खद्दर क चोली सिआव, बिदेशिया के दूर भगाव ॥४॥

हाली से फैशन क फांसी छोड़ाव,

नशा कोई मति खाव, बिदेशिया के दूर भगाव ॥ ५ ॥

हिम्मत न छोड़ तूं झन्डा उठाव,

पुरुषन क नांव बचाव, बिदेशिया के दूर भगाव ॥६॥

नौकरशाही से मति घबड़ाव,
शान्ती से बल अजमाव, बिदेशिया के दूर भगाव ॥७॥
"शंकर" अर्बन रुपिया बचाव,
जल्दी स्वराज तूं पाव, बिदेशिया के दूर भगाव ॥ ८ ॥

दोहा ॥११॥

दया कीजिये दास पर, दीन बन्धु भगवान।
जल्द फूट का नांस हो, हो भारत कल्यान ॥

शुभम्

दोहा

करणी करिके क्यों डरै, करिके क्यों पछिताय ।
बोवै पेड़ बबूल को, आम कहाँ ते खाय ॥

हर किसिम की स्कूली किताबें व स्टेशनरी सामान रामायण, ग़ज़ल, उपन्यास, इतिहास नेताओं का जीवन चरित्र उचित दामपर मिलने का एक मात्र भंडार अवश्य पधारकर परिक्षा कीजिये ।

मिलने का पता—

पं० रामसुन्दर त्रिपाठी बुकसेलर

घुन्धी कटरा मिरजापुर सिटी ।

हितैषी प्रिंटिंग वर्क्स, नीचीबाग, बनारस सिटी ।